R.N.I.- UP-HIN/2001/3996
ISSN- 2581-6128

स्थापन दिवस के 23वें वर्ष में प्रवेश

संयम • संस्कार • सन्तुलन

शहर समता

(हिंदी साप्ताहिक)

www.shaharsamta.com

शोध पत्र

'कर्मक्षेत्र रणभूमि यही है, मानव हो तुम कर्म करो।
कर्म से कभी विमुख न रहना, मन में यह संकल्प करो।'-
उमेश श्रीवास्तव

संस्थापकः स्व0 कन्हैया लाल, स्व0 श्रीमती साधना श्रीवास्तव
सम्पादकः उमेश चन्द्र श्रीवास्तव

रंजना बिनानी 'काव्या' पर विशेषांक

वर्ष 23 | अंक 36 | रविवार, इलाहाबाद, 4 फरवरी 2024 | पृष्ठ 4 | विशेषांक मूल्यः 3 रू0

संपादकीय

इस बार रंजना बिनानी 'काव्या'

क्यों अग्नि परीक्षा हर युग में ,
नारी को देना पड़ता है ।
चाहे सीता हो, या हो सती ,
नारी को जलना पड़ता है ।

नारी मन की उद्भावनाओं को प्रकट करती हुई रंजना बिनानी 'काव्या' नारी स्थिति और उसके अस्तित्व पर प्रबल प्रश्न उठाती हैं। अपनी उपरोक्त पंक्तियों में वह जो सवाल उठा रही हैं वह आज भी अनुत्तरित है। सहज मन की अभिव्यक्ति से परिपूर्ण रंजना बिनानी 'काव्या' एक कुशल कवियित्री हैं। गोंडा में जन्मी लेकिन अब गोलघाट, असम में बस चुकी रंजना

बिनानी 'काव्या' की शिक्षा-दीक्षा सब गोंडा यूपी में हुई। अपनी रचनाधर्मिता के माध्यम से पहचान बना चुकी रंजना बिनानी 'काव्या' की अब तक एक कृति 'मां जन्नत का फूल' प्रकाशित है। वह लघु कथाओं की अच्छी दृष्टा है। उनकी लघु कथाएं छोटी-छोटी समस्याओं को लेकर लिखी गई व्यावहारिक रचनाएं हैं। भक्ति भावना से ओत-प्रोत उनकी कविता की यह पंक्ति देखिये जिसमें वह अपने आराध्य राम के प्रति कहती हैं -

चलो अयोध्या धाम, निमंत्रण आया है ,
मेरे प्रभु राम का मंदिर बन आया है।
सभी राम भक्तों को लाखों बधाई है ,
शुभता इतनी मिली कि हृदय न समाई हैं।

फिर वह कहती हैं -

दीपों से सजा है अवध धाम ,
जश्न हो रहा मची है धूमधाम।
सरयू तट पर हो रहा यह शुभ काम ,
गर्भ ग्रह में पधारेंगे प्रभु राम।

प्रभु राम के प्रति रंजना बिनानी 'काव्या' का अनुराग विलक्षण है। प्रभु राम के प्रति समर्पित कवियित्री रंजना बिनानी 'काव्या' का काव्य जगत में क्या स्थान है, यह निर्णय आप स्वयं करें। हमें तो बस इतना ही कहना है कि दिसंबर माह के **सावित्री देवी स्मृति सम्मान** से नवाज़ी गई रंजना बिनानी 'काव्या' पर यह चार पेजीय विशेषांक आपको कैसा लगा, प्रतिक्रिया जरूर दें। अंत में -

रंजन-मनोरंजन सब है,
रंजना बिनानी के काव्य में ।
आगे बढ़े, यश पाए,
यही हमारा भाव है।

उमेश श्रीवास्तव

लिखते-लिखते आज मैं....

रंजना बिनानी 'काव्या' की कलम से

मेरा जन्म यूपी गोंडा शहर में हुआ है मैने एम ऐ अवध विश्वविद्यालय फैजाबाद से किया है । मैं अपने जीवन में सर्वाधिक अपने पिताजी से प्रेरित रही हूं। मेरे पिताजी आर एस एस के लीडर थे ,अटल बिहारी बाजपेई, नानाजी देशमुख, बल राज मधोक, मेरे पिताजी के मित्र हुआ करते थे ।

हम जब छोटे थे तो वो घर अक्सर आया करते थे। मेरे पिताजी ने उस जमाने में हमें को एजुकेशन में M.A. कराया था, जो कि हमारे लि ए बहुत ही प्राउड की बात थी। बच्चियों को उस समय ज्यादा पढ़ाया नहीं जाता था, यह आज से 40 साल पहले की बात है। पीएचडी करने कि मेरी बहुत इच्छा थी ,

लघु शोध जयशंकर प्रसाद की कामायनी पर मैंने लिखा था। मेरे हिंदी के दीक्षित सर मुझे बहुत सपोर्ट किया करते थे। शिक्षा के दौरान मेरे पिताजी का मुझे बहुत ही सपोर्ट मिलता रहा, मेरे लिए प्रभु की बहुत बड़ी कृपा थी ,और मेरा अहोभाग्य था की मैं अपने सभी शौक पूरे कर सकी।इसी बीच मेरी शादी 19 86 मैं हो गई। ससुराल मेरा बहुत दूर असम में मुझे मिला। शादी होते ही , पता चला मेरी सासू जी को कैंसर है उनकी तबीयत अचानक खराब हो गई , हमने 3 महीने तक उनकी रात दिन सेवा की और एक दिन मेरी सासू मां का निधन हो गया। शादी के 3 महीने बाद ही घर की पूरी जिम्मेदारी मेरे ऊपर आ पड़ी। देवर और ननदों की शादी वा घर की जिम्मेदारी मैंने बखूबी निभाई। इसी बीच मेरे ससुर जी को भी कैंसर हो गया उनको लेकर हम मुंबई कोलकाता ट्रीटमेंट के लिए घूमते रहे । 1 साल बाद उनकी भी डेथ हो गई। इस तरह शादी के तुरंत बाद, मैंने अपना पूरा जीवन जिम्मेदारियों को निभाते हुए ही बिताया। अपने बारे में सोचने का मुझे कभी मौका ही नहीं मिला, जब तक मैं स्वयं के लिए सोचती, बहुत देर हो चुकी थी ,क्योंकि मेरा तीन बार मिसकेरेज हो चुका था। आज मैं अपने देवर देवरानी के साथ जॉइंट फैमिली में रहती हूं उनके बेटा बेटी ही मेरे बच्चे हैं। मेरे कोई संतान नहीं है। सब की सेवा में ही मुझे सुख मिलता है अपनी देवरानी व ननदो की डिलीवरी भी मैंने कराई है। मेरे पति का कपड़े का बिजनेस है , लेडीज काउंटर हम संभालते हैं ,इस तरह अपने पति के बिजनेस में भी हम हाथ बटांते हैं।

आज मैं अपना पूरा जीवन घर परिवार व समाज सेवा में व्यतीत करती हूं। मेरे पति का मुझे हर जगह सपोर्ट मिलता रहा है। उनके साथ से ही मैं आज यहां तक पहुंची हूं।

महेश्वरी महिला संगठन की 2004 से लेकर 2022 तक में पदाधिकारी रही हूं । कोषाध्यक्ष -9 साल ,सचिव-3 साल और अध्यक्ष-6 साल इन पदों पर लगातार मैंने 19 साल बिताए हैं। कई संस्थाओं से जुड़ी हुई हूं। अंतर्राष्ट्रीय महेश्वरी कपल क्लब की अध्यक्षा हूं। कोरोना काल मे मुझे साहित्य से जुड़ने का मौका मिला, साहित्य संगम संस्थान से जुड़ कर मैंने बहुत सी विधाओं को सीखा -दोहा, ग़ज़ल, छंद,गीत ,कविता, इस तरह लिखते लिखते आज मैं' काव्या' की उपाधि से पहचानी जाती हूं। सच पूछो तो मुझे स्वयं को पहचानने का मौका कोरोना काल में मिला। आज मैं अनेकों मंचो से जुड़ी हुई हूं। मेरी कई पुस्तकें भी प्रकाशित हो चुकी हैं। 'आहुति' 'इद्नमम' 'मां जन्नत का फूल'मेरी स्वयं की रचनाओं का संकलन है , कई सांझा संकलन में मेरी रचनाएं प्रकाशित हो चुकी हैं। 'मां जन्नत का फूल' अभी हाल में ही प्रकाशित हुई है यह पुस्तक ऑनलाइन अमेज़न पर उपलब्ध है। अनगिनत सम्मान पत्रों से नवाजी जाती रही हूं। समाचार पत्र व पत्रिकाओं में मेरी रचनाएं छपती रहती हैं। सामाजिक कार्य के साथ ,पठन एवं लेखन का कार्य करके मुझे आत्मिक संतुष्टि मिलती है। आज लिखना मेरी दैनिक आदत सी बन चुकी है ,एक तरह से कहे तो यह एक नशा सा हो गया है। धन्यवाद

रंजना बिनानी 'काव्या' की कविताएं

सरस्वती वंदना

नमन करें हम मात शारदे,
हम पर दया दृष्टि कर दो,
ज्ञान कला संगीत की देवी,
विद्या बुद्धि ,मधुर स्वर दो।

तुम हो मां वीणा कर धारिणी,
जीवन को सुखमय कर दो,
ज्ञान की ज्योति जला कर के तुम,
मेरे जीवन को जगमग कर दो।

हंस वाहिनी, ज्ञान दायिनी,
जीवन को ज्योतिर्मय कर दो,
वेद बखानी ,ब्रह्म ज्ञानी...,
कृपा दृष्टि, हम पर कर दो..।

आकर तेरे द्वार खड़े हैं..,
प्रेम स्नेह ,रस बरसा दो..,
कृपा करो हे ,मातु दयालु,
प्यार से तुम झोली भर दो।

अपनी वीणा की धुन से मां,
मेरे जीवन को सुखमय कर दो,
हम तो तेरे ,शरण पड़े हैं...,
आशीर्वाद हमें तुम दो..।

'आओ चले अवध धाम'

आओ चले अवध धाम,
हमको बुला रहे प्रभु राम।
बना है मंदिर भव्य महान,
वर्षों के सपनों का परिणाम।

अवध में सजा है तोरण द्वार,
खुशियां छाई अपरंपार...।
ताले खुले रामलला हुए आजाद,
कार सेवकों के बलिदानों का है प्रताप।

अमर हो गया जिनका नाम...,
कोठारी बंधुओं की आहुति आई काम।
शौर्य भवन का हुआ है शिलान्यास,
जीवन पर्यंत रहेगा इनका नाम...।

इतिहास रचा है ये मोदी राज,
पूरे भारत में गूंजा है रामराज।
कस्बा- कस्बा कर रहा पुकार,
राम लला की हो रही जय जयकार।

दीपों से सजा है अवध धाम,
जश्न हो रहा मची है धूमधाम।
सरयू तट पर हो रहा ये शुभ काम,
गर्भ गृह में पधारेंगे ... प्रभु राम।

राम जन्मभूमि है बड़ी महान,
कर लो दर्शन पूर्ण होंगे सब काम।
चलो सब चलो अयोध्या धाम..,
हमको बुला रहे ..प्रभु राम...।

'गीता हमें देती कर्म का ज्ञान'

जग में आए हो तो ,
कर लो कुछ शुभ काम,
जाने के बाद जग में ,
रह जाता है केवल नाम।

गीता हमें सदा,
कर्म का देती है ज्ञान,
जन कल्याण की भावना,
ही है इसमें प्रधान।

कृष्ण अर्जुन से कहते हैं ,
सुन ले हे पार्थ,
धर्म युद्ध कर,
निराशा का दामन मत तू थाम।

यह जीवन है एक कालचक्र,
इसमें ना कोई तेरा मेरा है,
यह है जनकल्याण हित,
तेरे स्वजनों ने ही तुझे घेरा है।

मैं तेरे साथ खड़ा हूं,
असहाय क्यों खुद को समझता है,
चल शस्त्र थाम और बिगुल बजा,
कर्म यही अब तेरा है।

कर्तव्य तेरा ये ही है,
बिना कर्म जीवन अधूरा है,
भाग्य भरोसे कुछ नहीं होता,
कर्म ही तेरी पूजा है।

जनहित किया कार्य ,
लोक परलोक दोनों सुधारता है,
बाधाओ से भरा मार्ग है ये,
अब तुझको पार उतरना है।

दोहा

जय लंबोदर गजानंद, प्रथम पूज्य महाराज,
प्रथम मनाऊं आपको, पूर्ण कीजे सब काज।

एकदंत गजवदन विनायक, पार्वती के लाल,
पिता तुम्हारे शिव शंकर, कहलाते महाकाल।

रिद्धि सिद्धि संग में विराजे,
वाहन मूषक राज,
हाथ जोड़ विनती करूं ,
सब देवों के सरताज।

गुड़ के मोदक भोग प्यारा,
गजानन महाराज,
सच्चे मन से जो कोई ध्यावे,
पूर्ण होते हैं काज।

गणपति बप्पा मोरया,
करते सब जय जयकार,
कष्ट हरो भक्तों का देवा,
सुन लो करुण पुकार।

नव आगमन के पूर्व

नव आगमन के पूर्व,
नव द्वार सारे सज गए।
नव खुशियां चंहुओर छाई,
नव पुष्प देखो खिल गए।

गर्भ गृह बना श्री राम का,
नव मंदिर का निर्माण हुआ,
500 साल का लम्बा..,
इंतजार अब पूरा हुआ...।

सज गई अयोध्या नगरी,
घंटियां मृदु बजने लगी,
प्रमुदित अवध वासी हुए,
सरयू नदी की शोभा बढ़ गई।

नव वर्ष आगमन के पूर्व,
नव अवध जैसे बस गया।
बाल रूप श्री राम जी का,
देखने को जग सारा,अवध पहुंच रहा।

भव्यता नव अवध की देख,
नर नारी सब प्रमुदित हुए,
श्री राम जी के दर्शन करने को,
देश विदेश से विमान है उतर रहे।

गुजरता हुआ साल

बीत रहा है वर्ष 23 का,
नव वर्ष आने को है..।
गुजरता हुआ साल देखो,
कुछ पल में जाने को है ।

समय कभी रुकता नहीं है,
समय का पहिया चलता है।
गुजरता हुआ वक्त देखो ..,
आगे बढ़ने की शिक्षा देता है।

प्रतिदिन सुरभित होता उपवन,
जीवन जीने का अंदाज सिखाता है।
नवल पुष्प को देख मेरा मन,
नव सृजन की उमंग जगाता है।

गुजर गया जो भूल के,
आगे बढ़ना हमें सिखाता है।
गुजरता हुआ साल ...,
खट्टे मीठे अनुभव की, याद दिलाता है।

नई उमंग व नई तरंग ले,
नव वर्ष तुम्हारा स्वागत है।
खुशियों भरा साल हो 24,
नव वर्ष तेरा अभिनंदन है।

पुकारती है देखो शाम सुहानी

पुकारती है देखो ना आज फिर शाम सुहानी,
वह भी क्या दिन थे,
कितनी प्यारी थी जिंदगानी।

अल मस्ती में जीते थे,
बचपन की है यह कहानी,
काश वह दिन लौट पाते,
यादें सताती है सुहानी।

बचपन बीता धीरे-धीरे ,
ना जाने कब आ गई जवानी,
पढ़ लिख कर बड़े हुई,
जिम्मेदारियां की शुरुआत लगी सताने ।

शादी की फिर घड़ी आ गई ,
जिंदगी लगी गुनगुनाने,
सुनहरे सपनों से जिंदगी सजने लगी,
हो गई मस्तानी।

पिया मिलन की रुत आई,
फिर शुरू हुई नई कहानी,
पुकारती है देखो ना ,
आज फिर वो शाम सुहानी।

प्यार भरे सपनों की दुनिया ,
कर देती दीवानी,
यह जीवन है कितना प्यारा,
हर मोड़ की यादें हैं बडी सुहानी।

आज भी जब सोचती हूं,
तो खो जाती हूं सपनों में,
कितनी प्यारी कितनी सुंदर ..है
यह मेरी जिंदगानी।

नजर ना लगे किसी की ...
करती हूं दुआयें रब से..,
कृपा आपकी बनी रहे,
यूं ही हंसती मुस्कुराते
गुजरे ये ज़िन्दगानी।

अपना देश

ए देश मेरे, तू शान मेरी,
तुझ में बसती है, जान मेरी।
मेरे देश की सभ्यता संस्कृति ,
बनाती है अलग पहचान मेरी।

यहां पर्वतराज हिमालय है,
गंगा यमुना नदिया पावन है।
देवों की पावन भूमि है यह,
वीरों की जननी भारत है।

ए देश मेरे ,तू शान मेरी...
तुझ में बसती है, जान मेरी ..

ये महापुरुषों की तपोभूमि ,
यहां एकता और भाईचारा है।
सत्य अहिंसा का धर्म सिखाता,
गांधी, सुभाष,आजादी का रखवाला है।

ए देश मेरे,तू शाध मेरी...
तुझ में बसती है ,जान मेरी ..

यह हिंदुस्तान हमारा है....,
लहर लहर लहराता,
जहां तिरंगा प्यारा है।
सबसे प्यारा, सबसे न्यारा...,
यह देश मेरा, मतवाला है।

ए देश मेरे, तू शान मेरी..
तुझ में बसती है, जान मेरी ..

नारी एक संपूर्ण व्यक्तित्व

नारी सशक्तिकरण का करते हैं हम ऐलान,
आज की नारी है सशक्त,
उसकी है एक अलग पहचान।
नारी सशक्तिकरण से,
होता है नारी का उत्थान,
अब नारी बनी है स्वावलंबी ,
लोग करते हैं नारी का गुणगान।

नारी सशक्तिकरण का आज,
चल रहा अभियान है,
आज की नारी नहीं बेचारी ,
डर डर के नहीं जीती है।
अपनी आत्म सुरक्षा की हिम्मत भी,
आज उसमें आई है,
हर क्षेत्र में नारी ने,
अपनी नई छवि बनाई है।

रहे सुरक्षा हर नारी की,
डरने की अब नहीं बारी है,
आंखों में आंसू ना बहने पाये,
नारी ने अब हिम्मत आई है।
हर ना रहे नारी अपरिचित,
हर कार्य में उसकी हिस्सेदारी है,
नारी एक संपूर्ण व्यक्तित्व है, नारी
सशक्तिकरण की अधिकारी है।

क्योंकि अब नारी ने,
चांद पर जाने की कर ली तैयारी है,
दुनिया की सबसे ऊंची चोटी,
एवरेस्ट पर चढ़ने वाली भी नारी है।
भारत की महान एथलीट ,
पीटी उषा भी एक नारी है,
पायलट हो या पुलिस फोर्स,
हर जगह छाई अब नारी है।
नारी सशक्तिकरण की,
अब नारी ने कर ली तैयारी है।

मेरे राम

चलो अयोध्या धाम निमंत्रण आया है,
मेरे राम प्रभु का मंदिर बन आया है।
सभी राम भक्तों को लाखों बधाई है,
शुभता इतनी मिली ,कि हृदय न समाई है।

जो कल तक थे, बंद तालो जंजीरों में,
आज गर्भ गृह में ...पाया स्थान है।
वर्षों का सपना ,आज हुआ साकार है,
भव्य मंदिर देख, सबको गुमान है।

आज अवध में, हो रही धूमधाम है,
राम जन्मभूमि का ,हुआ नवनिर्माण है।
कार सेवकों के, बलिदानों का परिणाम है,
सरयू तट की, महिमा अपरंपार है..।

जहां जन्म ,चारों भाइयों ने पाया है,
अवध धाम में ,जन्मोत्सव मनाया है।
सनातन धर्म ने,,तुरही आज बजाई है,
चिर प्रतीक्षित, कामना पूरी हो आई है।

बेटी

'क्या समाज बेटी को ,
बेटे की तरह बराबरी का अधिकार देता है '

क्या ..समाज बेटा बेटी को
बराबरी का दर्जा देता है?
विचारणीय प्रश्न है यह,
इसका हल नहीं दिखता है।

माना बेटियों ने आज,
वह करके दिखलाया है,
बेटों से आगे पढ़ने में..
बेटियों ने नाम कमाया है।

हर काम में बेटों के साथ,
कंधे से कंधा मिलाया है,
बेटियों ने अपनी पुरानी छवि को,
बदलकर दिखलाया है।

किसी काम में काम नहीं बेटियां,
कई विश्व रिकॉर्ड बनाया है,
देश की उन्नति में भी बेटियों ने,
महत्वपूर्ण योगदान दिखाया है।

बड़े-बड़े पदों पर भी ,
आसीन आज हमारी बेटियां हैं,
बेटियों ने तो घर बाहर की ,
दोहरी जिम्मेदारी को निभाया है।

हर घर में बेटे बेटी को ,
समान अधिकार मिल रहा है,
पढ़ लिख कर बेटियों का भी,
जीवन संवर रहा है।

पहले और आजके जमाने में,जमीन
आसमान का फर्क आया है,
चार दिवारी में बंद बेटियों ने,
अब ऊंची उड़ान भर के दिखलाया है।

आत्मनिर्भर बनी बेटियां,
समान अधिकार की हकदार हैं,
सुन लो समाज वालों तुम,
बेटियां अब किसी चीज की
नहीं मोहताज है।

आती है लहरें

जीवन में आती है लहरें,
वक्त बदलता रहता है,
दुख के बाद सुख आता हैं।
एक सा समय कभी नहीं रहता है,
जी हां..वक्त बदलता रहता है।

जब बुरे वक्त की आती है लहरें,
सब कुछ अपने साथ बहा ले जाती है।
चुपके से अच्छा, वक्त जब दस्तक देता,
यह सच है कि ..किस्मत बदल जाती है।

जीवन चक्र यूं ही चलता जाता ,
हार के बाद ही, जीत मिलती है।
ज्यूं अंधेरी रात के बाद... ,
रोशनी की किरण, नजर आती है।

वक्त बदलता रहता है..,
जैसे मौसम कभी एक सा नहीं रहता है।
कभी गर्मी ,कभी सर्दी ,
तो कभी वर्षा होती है,
यूं ही अमावस की रात के बाद ,
स्वर्णिम सवेरा आता है।
जी हां .. जीवन में आती है
लहरें.वक्त बदलता रहता है ..।

क्यों अग्नि परीक्षा दे नारी

क्यों अग्नि परीक्षा हर युग में ,
नारी को देना पड़ता है..।
चाहे सीता हो या हो सती,
जलना नारी को पड़ता है..।

क्यों ..प्रश्न चिन्ह ,
नारी पर ही लगता रहता है।
क्या.. कोई ,राम से प्रश्न ये करता है?
धोबी के कहने में आकर ..,
क्या..कोई पत्नी का परित्याग करता है?

हर युग में नारी को ही क्यों...,
आत्म सम्मान खोना पड़ता है।
मर्यादा की बलिवेदी पर ,
क्यों.. नारी को चढ़ना पड़ता है।

प्रेम समर्पण की कसौटी पर,
क्यों.. नारी को तुलना पड़ता है।
नारी के कोमल तन मन को..,
क्यों.. घायल होना पड़ता है।

युग बदला.. सोच बदली..,
क्या ..नारी की किस्मत बदल सकी,
कहने को नारी सबला है..,
फिर भी वो.. तिल तिल मरती है।

क्यों . अग्नि परीक्षा दे नारी,
नारी . अब नहीं है बेचारी।
अबला, बनकर नहीं रहेगी अब,
नारी ने अब यह है .ठानी..।
नई ने अब यह है... ठानी।।

'वो दिन भी क्या दिन थे '

वह भी क्या दिन थे,
जब हम साथ साथ,
स्कूल जाया करते थे,
शरमाते थे, सकुचाते थे,
हंसते थे, मुस्कुराते थे,
बहुत सी, बातें होती थी,
कुछ अनकही, रह जाती थी,
कुछ कदम साथ चलते हुए,
ख्वाबों की दुनिया में चले जाते थे,
कभी गुमसुम हो जाते थे,
कभी हां हूं ,करते रह जाते थे,
कहने को हम दोस्त थे,
कभी-कभी अजनबी बन जाते थे,
बातों ही बातों में हम,
बहुत कुछ समझ जाते थे,
क्या तुमको याद है..,
हम कितने प्यारे दोस्त हुआ करते थे,
याद बहुत आती है तेरी,
काश वो दिन लौट आते,
बचपन की वह सारी खुशियां,
हम वापस जी पाते..।

नफरतें जिंदगी बर्बाद करती है

प्रेम से जी लो जिंदगी .,
नफरतें जिंदगी बर्बाद करती है।
मतलबी है ,दुनिया सारी .
जरूरत पड़ने पर,ये बात पता चलती है

नाते रिश्तेदार ,जो अपने हैं लगते,
नफरत को दिलों में फैलाते हैं।
ऊपर से जो है , हरदम मुस्काते,
नफरत की दीवारें ,घर में खड़ी करवाते हैं।

नफरत में व्यक्ति ,पागल हो जाते,
भाई- भाई के,दुश्मन बन जाते हैं ।
नफरतें पीढ़ी ,दर पीढ़ी चलती,
एक दूजे का मुंह देखने से ,कतराते हैं।

अपने पराये का, पता चल जाता,
जो बुरे वक्त में ,काम नहीं आते है।
नफरत में ,आदमी अंधा हो जाता,
नफरतें दिल का, सुकून छीन लेती हैं।

प्रार्थना वहम नहीं

प्रार्थना वहम नहीं,ईश्वर का वरदान है,
प्रभु की कृपा से ही, मिलता यह प्रसाद है।

प्रार्थना से दूर होता ,दिल का संताप है,
प्रार्थना से मन में आता, शांति का वास है।

प्रार्थना ईश्वर से प्रेम बढ़ाने का,
सुंदर मार्ग है,
प्रार्थना से मन में बढ़ता,
प्रेम और विश्वास है।

प्रार्थना प्रभु से, मिलने का सरल मार्ग है,
प्रार्थना प्रातः उठ करना,
बहुत ही अनिवार्य है।

प्रार्थना से दिल में फैलता,
ज्ञान का प्रकाश है,
प्रार्थना प्रभु से लगन लगाने का,
सुगम मार्ग है।

प्रार्थना कर प्रभु के दरबार में,
हम करते पश्चाताप हैं,
अपनी गलतियों को सुधारने का,
प्रभु से मांगते आशीर्वाद हैं।

प्रार्थना से मन में बढ़ता,आत्मविश्वास है,
अच्छे कर्मों में मन को लगाने का ,
प्रभु से मांगते हम प्रसाद है।

प्रार्थना से परिवार में होता,
सुख समृद्धि का वास है,
बच्चों में यह संस्कार डालना,
बहुत ही अनिवार्य है।

रंजना बिनानी 'काव्या' की चार लघुकथाएं

'भाग्य और परिश्रम'

रमेश के पिता ने बहुत गरीबी के दिन देखे थे,रिक्शा चला कर अपने बच्चों को पाल-पोस कर बड़ा किया, उनके चार बेटे थे,बेटे भी बहुत मेहनती थे, देखते-देखते उनके दिन पलटने लगे.. कपड़े की एक छोटी सी दुकान रमेश के पिता ने कर ली। धीरे-धीरे उनकी दुकान चल पड़ी,चारों बेटे संयुक्त परिवार में मिलजुल कर रहते थे, और छोटे से लेकर बड़ा काम अपने हाथों से करते थे। उनकी मेहनत रंग लाई और कपड़े की छोटी सी दुकान अब शोरूम में तब्दील हो गई। आज वह समाज में जाने-माने व्यक्ति के रूप में पहचाने जाते हैं।
दीनदयाल जी की खुशी का ठिकाना नहीं है कि भाग्य ने उनका साथ दिया और बेटों के परिश्रम व सहयोग से उन्होंने अपनी एक अलग पहचान बना ली है। वह लोगों को यह उदाहरण देते रहते हैं कि' बंद मुट्ठी लाख की खुल गई तो खाक की'।
आज उनके चारों बेटों ने मिलजुल कर मेहनत करके भाग्य को बदल दिया।यदि व्यक्ति चाहे तो क्या नहीं कर सकता दुख के दिनों में यदि भाग्य के भरोसे बैठे रहो तो कुछ नहीं होता है, मेहनत करने से परिश्रम का फल अवश्य मिलता है ,जो उनके बेटों ने कर दिखाया, आज सम्मिलित परिवार के रूप में दीनदयाल जी का पूरा परिवार साथ में रहता है। अपने बेटे पौतों के बीच में वह बहुत खुश हैं, और लोगों को ये सीख भी देते हैं कि व्यक्ति को अपने बुरे दिनों में हिम्मत नहीं हारनी चाहिए डटकर परिश्रम करना चाहिए। परिश्रम का फल एक में एक दिन अवश्य मिलता है।

खोटा सिक्का'

राजेश और रजनी दोनो अपने छोटे बेटे को लेकर बहुत चिंतित रहते थे, क्योंकि उसका पढ़ाई में एकदम भी मन नहीं था। राजेश का बड़ा बेटा मुकेश शुरू से पढ़ने में बहुत होशियार था, इंजीनियरिंग की पढ़ाई पूरी कर, उसकी जांब भी लग गई थी।
राजेश और राहुल की अक्सर कहां सुनी हो जाती थी। बी कॉम का रिजल्ट आया, राहुल दूसरी बार भी. कॉम. में फेल हो गया था। राजेश राहुल पर भड़क उठा.. बीच बचाव करते हुए राहुल के बड़े पापा ने कहां ,राजेश यू भड़कने से कुछ नहीं होगा.. ये मान कर चलो की यह हमारा खोटा सिक्का है...इससे कुछ भी आशा करना बेकार है। यह बात राहुल के दिल में तीर सी चुभ गई..।राहुल ने मन ही मन कुछ कर दिखाने की ठान ली थी...।
राहुल ने पढ़ाई छोड़ दी और अपने दोस्त के साथ मिल कर कंस्ट्रक्शन का काम करने लगा .. ,राजेश राहुल की इस हरकत से बिल्कुल खुश नहीं थे...कि अचानक रजनी की तबीयत खराब हो गई ... पता चला उसको कैंसर है। राजेश रजनी को लेकर मुंबई चला गया.. बड़े बेटे मुकेश को जब पता चला तो उसने छुट्टी ना मिलने के कारण आने में असमर्थता जाहिर की।
छोटे बेटे राहुल को जब यह बात पता चली तो वह.. अचानक मुंबई पहुंच गया और मां के इलाज में उसने कोई कसर नहीं छोड़ी.. तन- मन और धन से वो रजनी की सेवा में लगा हुआ था.. आज राजेश की आंखें छलक आई थी . क्योंकि उनका खोटा सिक्का ही .. उनके बुरै वक्त पर काम आ रहा था.. जिस बेटे पर उन्हें बहुत गुमान था, वह धरा का धरा रह गया।

नई बहू--

राजेश ने अपनी मनपसंद लड़की से शादी की थी, नाम था कुमुद। आज कुमुद का अपने ससुराल में गृह प्रवेश था क्योंकि वह पहली बार अपने ससुराल जा रही थी। राजेश और कुमुद ने घर वालों को बिना बताए शादी कर ली थी। लेकिन जब घर वालों को पता चला तो उन्होंने, नई बहू के स्वागत की सारी तैयारी कर, राजेश को घर आने के लिए कहा। राजेश बहुत घबरा रहा था क्योंकि उसने इंटर कास्ट मैरिज की थी। डर के कारण उसने घर में किसी को नहीं बताया था। लेकिन.. जब अचानक फोन की घंटी बजी.. और मां ने कहा बेटा नई बहू को घर लेकर कब पहुंच रहे हो.. राजेश की खुशी का ठिकाना ना रहा।
राजेश और कुमुद घर पहुंचे तो उनकी आंखें फटी की फटी रह गई... नई बहू के स्वागत में.. घर की सजावट..व घर वालों की बेताबी देखकर राजेश फुला नहीं समा रहा था. उसका डर तो जैसे छूमंतर हो गया था। मां ने दरवाजे पर ही बेटे बहू की आरती उतारी और नजर उतार के बड़े प्यार के साथ नई बहू का गृह प्रवेश कराया।
बहनों ने दरवाजे पर बाड़ रुकाई का नेग भैया भाभी से लेकर घर में आने की अनुमति दी... सब कोई बहुत ही हंसी खुशी से नेगचार में लगे थे कि... तभी पड़ोस की चाचीजी अचानक आ गई.. और बोली अरे कमला तू तो चुपचाप बहू भी ले आई और हमें खबर तक नहीं किया, वह जोर-जोर से मां से बातें कर रही थी कि कुमुद ने जाकर उनके पांव छु लिए... देखते ही चाची जी खुश हो गई और बोली कमला तुम्हारी नई बहू तो बहुत ही संस्कारी है। हम तो सोच रहे थे ना जाने राजेश कैसी लड़की शादी करके घर ले आया है.. बहू तो-बहुत संस्कारी और सुंदर है। चाची जी ने जाकर मोहल्ले भर में यह खबर फैला दी कि राजेश ने शादी कर ली है और कमला की बहु बहुत ही सुंदर और संस्कारी आई है। दूसरे दिन रिवाज के अनुसार नई बहू की मुंह दिखाई की रश्म रखी गई। पूरे मोहल्ले को मुंह दिखाई में बुलाया गया। जो कल तक कानाफुंसी कर रहे थे वो सब नई बहू को देकर के बड़े खुश हुए और बोले कमला तेरा बेटा तो बड़ा होशियार निकला।' न हींग लगी ना फिटकरी,' और तुम्हारे घर तो बहू भी आ गई, वह भी इनकी सुंदर और सुशील।
कुमुद में कभी सोचा नहीं था कि उसका इतना सुंदर स्वागत सत्कार उसके ससुराल में किया जाएगा... कुमुद की सासू मां सबको बड़े फक्र से बता रही थी कि मेरा बेटा अपनी पसंद से बहू लाया है तो क्या ... है तो यह हमारे घर की लक्ष्मी। और लक्ष्मी का स्वागत धूमधाम से ही किया जाता है।
दिन बीतते गए... कुमुद घर में ऐसे घुल मिल गई थी कि उसे लगता ही नहीं था ,कि वह अपने ससुराल में है। कमला बड़े लाड प्यार से अपनी बहू का सबसे परिचय करवाती थी और हर जगह अपने साथ लेकर जाती थी।
एक दिन कमला के पति को एक बहुत बड़ा टेंडर मिला जिसके मिलने की उन्हें आशा ही नहीं थी... राजेश अपने पिता के साथ बिजनेस में लगा हुआ था। अचानक कुछ दिन से राजेश के चले जाने के बाद उसके पिता थोड़े मायूस से हो गए थे.. अचानक जब टेंडर उन्हें मिला तो उनकी खुशी का ठिकाना ना रहा और अपनी बहू की बलाईयां लेते हुए बोले मेरे घर में लक्ष्मी का गृह प्रवेश हुआ है... मेरे घर में नई बहू लक्ष्मी बनकर आई है..। इतना सम्मान अपने सास ससुर से पा कर कुमुद तो जैसे धन्य ही हो गई थी.. । उसने सपने में भी नहीं सोचा था की सास ससुर इतने अच्छे भी हो सकते हैं। जिस ससुराल में आने से पहले उसके मन में इतनी शंकाएं थी ..कि ना जाने मेरा ससुराल कैसा होगा।मैं वहां कैसे रहूंगी। सास ससुर कैसे होंगे..। कुमुद की खुशी का ठिकाना न था ..क्योंकि उसे ऐसे लगता था कि सास ससुर के रूप में उसे मम्मी पापा मिल गए हैं। उसके मन में रह रहकर एक बात ही आ रही थी.. ईश्वर करें ऐसा ससुराल हर बहू को मिले।

'साया'

सागर गांव में रात में गर्मी के दिनों में सब छतों पर सोते थे,रमेश के भी परिवार के सभी लोग छत पर सोए हुए थे। अचानक रमेश की आंख खुली, तो उसने सूना जैसे किसी के चलने के आवाज आ रही थी रमेश से रहा नहीं गया ,वो उठकर नीचे आ गया, उसने घर का दरवाजा खोला और बाहर जाकर देखा तो उसे थोड़ी सी दूर पर एक साया नजर आया, जिसके हाथ में एक दिया जल रहा था और वो साया आगे बढ़ता जा रहा था, रमेश उसे साये के पीछे-पीछे जाने लगा.. जैसे कोई अदृश्य सी शक्ति उसे अपनी ओर खींच रही थी ,एक जगह जाकर वह साया गायब हो गया, रमेश उसका पीछा करते हुए जब वहां पहुंचा ,तो स्तब्ध रह गया .क्योंकि उन दिनों गांवों में डकैतियां बहुत हो रही थी, चार-पांच व्यक्ति आपस में मंत्रणा कर रहे थे कि आज हमें सेठों के घर में जाकर डाका डालना है। डर के मारे रमेश के पांव नहीं उठ रहे थे ,क्योंकि वो जिनके घर में डाका डालने की बात कर रहे थे.. वह उसी का घर था। उसे समझ नहीं आ रहा था वह क्या करें कि अचानक उसे वो साया अपने पीछे खड़ा नजर आया.. जैसे वह कह रहा था कि तुम मेरे साथ साथ चलो,और रमेश उस साये के पीछे-पीछे पुनः चल पड़ा.. डाकूओं ने जब दीपक की रोशनी देखी तो वो डर गए ,उन्हें लगा कि शायद किसी ने उनकी बातें सुन ली है। और वह गांव की तरफ लोगों को सतर्क करने जा रहा है। क्योंकि वह रोशनी धीरे-धीरे गांव की ओर बढ़ रही थी। गांव में लोग जाग न जाएं..और उन्हें पकड़ ले, इस डर से डाकू लोग उस गांव से भाग गए। रमेश जैसे तैसे अपने घर पहुंचा, और वह साया भी न जाने कहां गायब हो गया।
जब रमेश ने घर वालों को सारी बातें बताई तो सब ने कहा, वह साया और कोई नहीं हमारे गांव की रक्षा करने वाली देवी सती माता जी का था ,जो हमें आगाह करने आई थी ,उन्हीं की कृपा से आज हम डाकुओं से बच गए। सती माता जी हमारे गांव की हमेशा रक्षा करती हैं। इसीलिए आसपास के गांव में हमेशा डकैतियां होती है ,लेकिन सागर गांव में डाकू आने की हिम्मत नहीं कर पाते हैं। जब अपने दादाजी के मुंह से यह बातें सुनी तो रमेश आवाक रह गया । तो कल रात में जो साया मैंने देखा क्या वह सती माता का था। यह सच है कि वह साया आज भी गांव के आसपास रात में घूमता रहता है और गांव वालों की रक्षा करता है।

रंजना बिनानी 'काव्या' : जीवन वृत्त

नाम--रंजना बिनानी
उपनाम -'काव्या'
जन्म स्थान -गोंडा उत्तर प्रदेश
जन्मतिथि-24 अगस्त 1959
विवाह तिथि -29 जून 1986
निवास स्थान---गोलाघाट,असम
पति का नाम- पवन कुमार बिनानी
पिताजी का नाम- श्री सत्यनारायण जी सोमानी ,गोंडा निवासी
माता का नाम- कृष्णा देवी सोमानी
ससुर जी एवं सासू मां-- स्वर्गीय लक्ष्मीनारायण जी बिनानी एवं पाना देवी बिनानी -सागर बीकानेर निवासी
प्रारंभिक शिक्षा-राजकीय बालिका विद्याल य गोंडा,
B.A.-डिग्री कॉलेज गोंडा
M.A. in हिंदी literature- अवध विश्वविद्यालय
लघु शोध-जयशंकर प्रसाद की कामायनी पर

रुचि-- साहित्य लेखन एवं सामाजिक कार्य में,गायन, पढ़ने में रूचि

पद-
1-गोलाघाट महेश्वरी महिला संगठन अध्यक्षा-- 6 साल ,सचिव - 3 साल कोषाध्यक्ष-9 तक रह चुकी हूं।
2-अखिल भारतीय माहेश्वरी महिला संगठन की कार्यसमिति सदस्य हूं
3-अंतर्राष्ट्रीय कपल क्लब गोलाघाट की प्रेसिडेंट हूं
4-साहित्य संगम संस्थान आसाम इकाई की अध्यक्षा हूं
5--शहर समता विचार मंच असम इकाई गोल ाघाट की अध्यक्षा
6--सामायिक परिवेश असम अध्याय की अध्यक्षा
7-क्रांति वीर- मंच की उपाध्यक्षा हूं
8--नवोदय साहित्यिक मंच की पंच परमेश्वरी हूं
9--हिंद देश परिवार गोलाघाट की संरक्षिका
10-पतंजलि द्वारा महिला योग गुरु का सम्मान प्राप्त

सभी संस्थानों से अब तक अनगिनत सम्मान प्राप्त किये हैं। उनमें से जो विशेष हैं-
माहेश्वरी महिला संगठन द्वारा आंल असम में प्रथम पुरस्कार--'सुश्रीता नारी सम्मान'
पूर्वोत्तर में यानी कि 5 प्रदेशों में (असम पश्चिम बंगाल, नेपाल ,उड़ीसा, झारखंड) मे 'श्रेष्ठ नारी काव्य साम्राज्ञी ' सम्मान प्रथम पुरस्कार ,ऑल इंडिया में तृतीय पुरस्कार प्राप्त किया। लेखन का विषय था' पति पत्नी का रिश्ता आज के संदर्भ में'।
'काव्या'की उपाधि से सम्मानित हूं।
साहित्य संगम संस्थान द्वारा मेरी रचनाओं की किताब 'आहुति' एवं 'इद्दम्म ' दो पुस्तक भेंट प्रदान की गई

फिलहाल मेरी एक पुस्तक प्रकाशित हुई है ... नाम है ..'मां जन्नत का फूल'
'अभिव्यक्ति अंतर्मन की', 'कविता के प्रमुख हस्ताक्षर'जैसे कई सांझा संकलन प्रकाशित हो चुके हैं पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएं प्रकाशित हुई है।

शहर समता - ब्यूरो प्रमुख

देहरादून ब्यूरो - निशा अतुल्य,
सतना ब्यूरो - डॉ ऊषा सक्सेना,
रीवां ब्यूरो - साधना तिवारी,
लखनऊ ब्यूरो - मंजु सक्सेना,
जबलपुर ब्यूरो - शैली सेठ,
लुधियाना ब्यूरो - श्रद्धा शुक्ला,
जौनपुर ब्यूरो - डॉ मधु पाठक,
हैदराबाद ब्यूरो -रीना प्रदीप कुमार,
भिलाई ब्यूरो - संध्या चंदेल,
गोरखपुर ब्यूरो - चित्रा श्रीवास्तव,
दिल्ली ब्यूरो - अफरोज़ अजीज,
तिनसुकिया गोलाघाट ब्यूरो - रंजना बिनानी,
प्रयागराज ब्यूरो - डॉ आकांक्षा पाल,
भीलवाड़ा ब्यूरो - डॉ राजमति पोखरना,
इंदौर ब्यूरो - आशा जाकड़,
शिलांग ब्यूरो - डॉ अनीता पंडा,
बिलासपुर ब्यूरो - स्मृति मिश्रा 'रीति,
रायपुर ब्यूरो - सीमा निगम,
कानपुर ब्यूरो - सीमा वर्णिका,
भोपाल ब्यूरो - दीपमाला तिवारी,
दमोह ब्यूरो- भावना शिवहरे,
मण्डला ब्यूरो - डॉ अर्चना जैन
बनारस ब्यूरो - सुनीता जौहरी,
आरा ब्यूरो - सिम्पल सिंह,
बिजनौर ब्यूरो - ऋतुबाला रस्तोगी,
पठानकोट ब्यूरो - क्षमा लाल गुप्ता,
सप्तरी नेपाल ब्यूरो - करुणा झा,
धमतरी ब्यूरो - कामिनी कौशिक,
रामपुर ब्यूरो - चंद्रिका कुमार 'चांदनी',,
मुरादाबाद ब्यूरो - अभिव्यक्ति सिन्हा,
कटनी ब्यूरो - मीरा भार्गव,
पटना ब्यूरो - अंजू भारती

शहर समता (हिन्दी साप्ताहिक) के वार्षिक एवं तीन वर्षीय सदस्य बनें।

वार्षिक सदस्यता के लिए -200/- तीन वर्षीय सदस्यता के लिए -500/-

कृपया 'शहर समता' के नाम से चेक या आनलाइन भेज सकते है।
IFSC Code- PUNB0100120 A/c.-1001050011592

व्यवस्थापक
शहर समता (हिन्दी साप्ताहिक)
289/238 ए (अनंत भवन) कर्नलगंज ,इलाहाबाद-211002

पीडीफ़ के लिए
shaharsamta.blogspot.com
पर जाएँ ।

संस्थापक
स्व0 कन्हैया लाल, स्व0 साधना श्रीवास्तव

सम्पादक
उमेश चन्द्र श्रीवास्तव
आरएनआई नं0 UPHIN/2001/3996

उप संपादक
डा0 अरूण कुमार मिश्रा
रचना सक्सेना

Mo. 9005239332
Email-shaharsamta@gmail.com

स्वत्वाधिकारी/मुद्रक/प्रकाशक/सम्पादक उमेश चन्द्र श्रीवास्तव द्वारा इण्डियन प्रेस (पलि.) प्रा0लि0, 36 पन्ना लाल रोड, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर 289/238ए, (अनन्त भवन) कर्नलगंज, इलाहाबाद से प्रकाशित।

इस अंक के प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा समस्त विवादों का निपटारा इलाहाबाद न्यायालय में ही होगा।

गरीब

प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना (PM-GKAY) से सभी के लिए खाद्य सुरक्षा

विश्व की सबसे बड़ी सामाजिक कल्याण योजना,
5 वर्षों के लिए बढ़ाई गयी, **80 करोड़** से अधिक लोगों को खाद्य सुरक्षा प्रदान करने का लक्ष्य

पीएम आवास योजना से गरीबों के लिए पक्के मकान

वंचितों के लिए 4 करोड़ से अधिक पक्के घर
अपने घर का सपना पूरा कर सम्मान से जीवन जीने का मिला अधिकार

पीएम उज्ज्वला योजना से धुआं रहित रसोई

10 करोड़ से ज्यादा परिवार
खाना पकाने के स्वच्छ ईंधन कनेक्शन के साथ जी रहे स्वस्थ जीवन

> **भारत बदल रहा है और बहुत तेजी से बदल रहा है। आज लोगों का आत्मविश्वास, सरकार के प्रति उनका विश्वास, और नए भारत के निर्माण का संकल्प चारों तरफ दिखता है।**
>
> - प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी

युवा

मुद्रा योजना से युवा उद्यमियों के लिए ऋण
युवा भारत के सपनों को पंख देने और आत्मनिर्भरता के अवसर पैदा करने के लिए **₹26 लाख करोड़** से अधिक के 45 करोड़ ऋण स्वीकृत

स्टार्टअप इंडिया के तहत स्टार्टअप के माध्यम से रोजगार सृजन
100 से अधिक यूनिकॉर्न के साथ भारत दुनिया के **टॉप 3 स्टार्टअप इकोसिस्टम** वाले देशों में शामिल और 1.14 लाख स्टार्टअप भारत के महत्वाकांक्षी युवाओं के लिए **12 लाख से अधिक नौकरियां** पैदा कर रहे हैं

खेल जगत में खुले नए द्वार
खेलो इंडिया और टारगेट ओलंपिक पोडियम जैसी योजनाओं से प्रेरित होकर टोक्यो ओलंपिक, पैरालंपिक और हांगझोउ एशियन गेम्स में **भारतीय खिलाड़ियों का अब तक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन**

अन्नदाता

पीएम किसान सम्मान निधि से खुशहाल किसान
किसानों को हर साल ₹ 6,000 की सुनिश्चित आय; अब तक **11.8 करोड़ किसानों को ₹2.8 लाख करोड़ की सहायता** से वित्तीय सुरक्षा

किसान क्रेडिट कार्ड से तत्काल ऋण की सुविधा
किसान क्रेडिट कार्ड (KCC) से **7.3 करोड़ से अधिक किसानों को ₹9 लाख करोड़ का ऋण;** एक सुरक्षा कवच जो उनकी फसलों को सहारा देता है और उन्हें विकास की नई संभावनाओं के लिए सशक्त बनाता है

कृषि अवसंरचना कोष से कृषि बुनियादी ढाँचे का आधुनिकीकरण
कृषि अवसंरचना कोष के तहत **₹1 लाख करोड़** के निवेश को मंजूरी, **कृषि पद्धतियों को आधुनिक बनाने और किसानों की आय बढ़ाने** की दिशा में एक बड़ा कदम

गरीब अन्नदाता युवा नारी शक्ति का सशक्तीकरण

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने राष्ट्र के समावेशी विकास पर विशेष जोर दिया है, और इसलिए उन्होंने हमें GYAN: गरीब, युवा, अन्नदाता और नारी शक्ति पर ध्यान केंद्रित करने का रोडमैप दिया है।

नारी शक्ति

महिलाओं के लिए सामुदायिक सहायता
10 करोड़ से ज्यादा महिलाएं स्वयं सहायता समूहों से जुड़ीं; **2 करोड़ महिलाओं को लखपति दीदी** बनाने का संकल्प

सुकन्या समृद्धि योजना से बेटियों के लिए वित्तीय सुरक्षा
10 वर्ष से कम उम्र की हर बेटी का भविष्य सुरक्षित करने के लिए **3.2 करोड़ सुकन्या समृद्धि खाते खुले,** एक सशक्त भविष्य का वादा

जल जीवन मिशन से स्वच्छ पेयजल
14 करोड़ से अधिक परिवारों के लिए नल से स्वच्छ पेयजल उपलब्ध, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों की सभी महिलाओं और परिवारों का अच्छा स्वास्थ्य और कल्याण सुनिश्चित

cbc 22201/13/0233/2324